

रक्तमोक्षण पध्यतियों का त्वचा के सौन्दर्यवर्द्धन में प्रयोग

प्रो. देवेन्द्र नाथ पाण्डे*, डॉ. शिवांगी सिंह**

सारांश

रक्तमोक्षण एक आयुर्वेदिक चिकित्सकीय प्रक्रिया है, जो शरीर से अशुद्ध रक्त की थोड़ी मात्रा को नियंत्रित रूप से बाहर निकालने पर केंद्रित है। रक्तमोक्षण अर्थात् रक्त का मुक्त होना, अथवा निष्काषित होना। रक्त की अशुद्धियों से उत्पन्न होने वाले विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रयुक्त एक प्राचीन भारतीय पद्धति है। जिसके विषय में सुश्रुत संहिता एवं अष्टांगहृदय सूत्र आदि प्राचीन भारतीय में भी वर्णन प्राप्त होता है। इसे पंचकर्म में से एक कहा गया है। जिसका उद्देश्य शरीर से अशुद्ध रक्त (दूषित रक्त) का निष्कासन कर विभिन्न विकारों का उपचार करना है। रक्तमोक्षण रक्त को शुद्ध करके और विभिन्न स्थितियों, विशेष रूप से बढ़े हुए पित्त दोष के कारण उत्पन्न होने वाली व्याधियों जैसे जोड़ो, एवं मांस पेशियों संबंधी विकार, नसों एवं बवासीर उच्च रक्तचाप एवं हृदय संबंधी रोगों, त्वचा विकार, सूजन संबंधी रोग का निवारण करता है। रक्तमोक्षण पित्त की गड़बड़ी एवं अशुद्ध रक्त के कारण होने वाले दीर्घकालिक त्वचा रोगों के उपचार में अत्यधिक प्रभावी है। एकज्जमा, सोरायसिस, मुँहासे एवं जीवाणु संक्रमण जैसी स्थितियों में रक्तमोक्षण प्रक्रिया लाभकारी है, यह विधि रक्त को विषमुक्त करके एवं परिसंचरणतन्त्र में सुधार करके सूजन, खुजली एवं लालिमा को कम करने में मदद करती है। रक्तमोक्षण की पद्धति सिरव्याध चिकित्सा, जलौकावचारण, अलाबू विधि, श्रृंग विधि आदि विधियों एवं प्रक्रियाओं से सम्पन्न की जाती है।

कुंजिका शब्द – सौन्दर्य, त्वचा, जलौका, रक्तमोक्षण, सौन्दर्य

उद्देश्य - प्राचीन रक्तमोक्षण पद्यति से त्वचा व्याधियों के निवारण एवं सौन्दर्यवर्द्धन की प्रक्रिया का वर्तमान में प्रासंगिक होना।

भूमिका

आयुर्वेद में विषहरण प्रक्रियाओं बहुत अधिक महत्व है, शरीर में विषाक्त पदार्थ जमा होने से दोषों (वात, पित्त एवं कफ) का संतुलन बिगड़ सकता है, जिससे शरीर में रोगों का प्रादुर्भाव सकते हैं। इस संतुलन को बनाए रखने में रक्त की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिनमें रक्तमोक्षण प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। रक्तमोक्षण पंच-जैविक शुद्धिकरण प्रक्रियाओं में से एक आवश्यक प्रक्रिया है।¹ इन प्रक्रिया का उद्देश्य रक्तप्रवाह के द्वारा अतिरिक्त उतप्तता एवं अशुद्धियों को दूर करना है, जिससे दोषों का संतुलन बनाये रखा जा सके जिसके फलस्वरूप प्राण उर्जा एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। रक्तमोक्षण रक्त को शुद्ध करने की प्रमुख तकनीकों में से एक है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके शरीर से रक्त का निष्कासन किया जाता है। जिनमें शस्त्रविस्त्रवण एवं अनुशस्त्र विस्त्रावण दो विधिया प्रमुख रूप से महत्वपूर्ण है। जिनमें शस्त्रविस्त्रवण के अंतर्गत प्रच्छान एवं सिरावेध, इस विधि में जिन शस्त्रों से अशुद्ध रक्त का निष्कासन किया जाता है

* आचार्य सेवानिवृत्त, संज्ञाहरण विभाग, आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान, संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

** सहायक आचार्य (महाराज सुहेल देव विश्वविद्यालय), Email- Shivangihistory@gmail.com

¹. अनुशस्त्र कर्म : डॉ. डी.यन. पांडे, संज्ञा हरण शोध, वाल. 7,8,9,10,11- बी.यस.ए., ओ.टी. ब्ला, इंडियन मेडिसिन, यस. यस. यच., बी.यच. आई., वाराणसी

वह सामान्यतः लौह परन्तु रजत, काष्ठ, ताम्र आदि अनेक धातुओं से भी निर्मित होते हैं। अनुशस्त्र विस्त्रावण विधि¹ का प्रयोग वात दोष से दूषित रक्त का मोक्षण किया जाता है। इनमें जिन शस्त्रों अथवा उपायों को प्रयुक्त किया जाता है वह लौह से रहित किसी धातु से निर्मित होना चाहिए। जिनमें शृंग, जलौका आलाबू, घंटी यंत्र आदि विधिया आदि विधिया प्रयुक्त की जाती है। सुश्रुत के अनुसार² रक्तमोक्षण एक महत्वपूर्ण गैर-औषधीय हस्तक्षेप है, जिसके द्वारा दूषित रक्त, पित्त, सिरवेध, जलौका, शृंग या प्रच्छना जैसी प्रक्रिया जो विशिष्ट दोष रोग चिकित्सा के उपयोग से राहत प्रदान करता है। रक्तमोक्षण की इन्ही विधियों को शोधन प्रकार एवं शामक प्रकार में भी विभाजित किया जाता है। शोधन इसमें ज्यादा मात्रा में खून निकाला जाता है। इनके अन्तर्गत शिरा वेधन एवं जौक चिकित्सा प्रणाली सम्मिलित है एवं शामन प्रकार इसमें थोड़ी मात्रा में रक्त निकाला जाता है। इनमें अलाबू एवं शृंग विधियाँ हैं। इस प्रक्रिया द्वारा अनेक विकारों, व्याधियों का नाश हो जाता है, जिनमें काय चिकित्सा एवं चिकित्सा दोनों अनुशसित किया जाता है। जिनमें त्वचा संबंधी विकार, उच्च रक्तचाप एवं जोड़ों के दर्द जैसी समस्याओं से अभियान किया जाता है। सामान्यतः इस विधि में रक्त प्रवाह को शब्द करने, रक्तसंचार में सुधार करने एवं शरीर की प्राकृतिक सामान्यतः इस विधि में रक्त प्रवाह को शुद्ध करने, रक्तसंचार में सुधार करने एवं शरीर की प्राकृतिक उपचार क्षमता को बढ़ाने में सहायक होती है एवं जोड़ों एवं मांसपेशियों की पीड़ा, रक्तमोक्षण जोड़ों के दर्द को कम करता है एवं गतिशीलता को बढ़ाता है। यह प्रक्रिया पाचन विकार को भी दूर करती है इससे पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में भी सहायता प्राप्त होती है। क्योंकि यह अपच को प्रभावित करने वाली रक्त अशुद्धियों को दूर करता है। इसका उपयोग अपच एवं कब्ज जैसी समस्याओं के उपचार में किया जाता है। **इस आयुर्वेदिक प्रक्रिया का त्वचा के सम्बन्ध में उपयोगी होना ही इस शोध पत्र केंद्र है।** इस प्रक्रिया द्वारा खून की शुद्धि होती है जिससे रक्त से विषाक्त तत्वों का शरीर से निष्कासन होता है एवं आन्तरिक रूप से संतुलन प्राप्त होता है। जिससे त्वचा आन्तरिक रूप से स्वच्छ एवं उज्ज्वल होती है। त्वचा में सूजन एवं जलन कम करता है, जिसमें रक्तमोक्षण की जलौका विधि कारगर है, जलौका के लार में सूजनरोधी तत्व होते हैं जो त्वचा की सूजन कम करते हैं। यह विधि त्वचा में खुजली एवं पित्त विकार से राहत दे कर खून में बढ़े हुआ पित्त दोष को कम कर देता है, जिससे खुजली, जलन लाल दाने जैसे लक्षण कम होते हैं। अशुद्ध रक्त के निष्कासन से नये परत बनते हैं। विषाक्त रक्त के बाहर निकलने से शरीर नवीन रक्त बनता है, जिससे रक्त की ऊपरी परत तेजी से दोबारा बनती है एवं स्वाभाविक निखार एवं सौन्दर्य का वर्द्धन होता है। रक्त की शुद्धि के बाद त्वचा में दीप्ति अथवा प्रदीपन आता है, पीटक, त्वचा के काले धब्बे घटते हैं एवं मुख कान्तिमय होकर दमकता है। रक्तमोक्षण एक्जिमा, सोरायसिस एवं मुंहासे जैसी गंभीर त्वचा संबंधी समस्याओं के उपचार के लिए बेहतरीन है। यह प्रक्रिया उन विषाक्त पदार्थों को हटाती है जो इन समस्याओं को बढ़ाते हैं, फलस्वरूप त्वचा साफ एवं स्वस्थ हो जाती है।

रक्तमोक्षण प्रक्रिया त्वचा पर प्रकट हुए एक्जिमा, प्रत्युजेता (एलर्जी), मुंहासे, फोड़े-फुंसी, लाल चकत्ते दाद/खुजली इत्यादि का उपचार करता है। परन्तु इन सभी त्वचा सम्बन्धी विसंगतियों के अतिरिक्त कुछ अति सम्बेदनशील त्वचा सम्बन्धी बीमारियाँ अथवा रोग जो सोरायसिस एवं कुष्ठ रोग के रूप में चिन्हित हैं। इन रोगों के उपचार में रक्तमोक्षण को प्रक्रिया कारगर है एवं रोगी को इन रोगों से निदान करती है।³

1. विश्वायन आयुर्वेद पंचकर्म क्लिनिक, 133, पहली मंजिल, मेहर शेल्टर, बटुकभाई ज्वैलर्स के पीछे, धरमपेट, नागपुर, 440010 की वेबसाइट के लेख द्वारा संदर्भित

2. सुश्रुत संहिता : टीकाकार डॉ. अम्बिकादत्त शास्त्री, प्रकाशक : जय कृष्णदास हरिदास गुप्त, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, सूत्रस्थान, 13 अध्याय, पृ. 43, प्रथम संस्करण, 1954

3. कामा आयुर्वेद, दिल्ली, इस रजिस्टर टी यम एंड अ ब्रांड के आर. यम. आयुर्वेद लिमिटेड की वेबसाइट के लेख द्वारा संदर्भित

रक्तमोक्षण पध्दतियों का सोरायसिस में उपयोग

सोरायसिस एक प्राचीन स्वप्रतिरक्षी (ऑटोइम्यून) स्थिति है, जिसमें त्वचा की कोशिकाओं का तेजी से क्षय होता है, एवं त्वचा की सतह पर मोटे, पपड़ीदार पैच बनते हैं। यह पैच अक्सर लाल अथवा चांदी सदृश सफेद रंग के होते हैं, शरीर के किसी भी अंग पर दृशमान हो सकते हैं, परन्तु मुख्य रूप से कोहनी, घुटने, खोपड़ी और पीठ के निचले हिस्से को प्रभावित करते हैं। यह स्थिति प्रतिरक्षा प्रणाली में दोषपूर्ण संकेतों के कारण होती है जो त्वचा कोशिका उत्पादन को तेजी से बढ़ाते हैं। तनाव, संक्रमण और कुछ दवाओं के हानिकारक दुष्प्रभाव से सोरायसिस की समस्या हो सकता है अथवा बढ़ सकता है। हालांकि इसके इलाज ज्यादा प्रभावी नहीं है, लेकिन विभिन्न उपचार लक्षणों को प्रबंधित करने और इस लगातार त्वचा विकार से प्रभावित लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं। सोरायसिस हेतु रक्तमोक्षण की सिरावेध विधि (नस में छेद करना) कार्यरत इस प्रक्रिया से ब्लडस्ट्रीम से टॉक्सिन और सूजन पैदा करने वाले तत्व निकाले जाते हैं एवं रक्त संचरण एवं त्वचा में ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाता है। खुजली, पपड़ी, लालिमा कम करता है। बीमारी को बढ़ने एवं पुनः होने से रोकता है। वात, पित्त एवं कफ दोष को संतुलित करता है।¹

रक्तमोक्षण पध्दति का कुष्ठ रोग में प्रयोग

आयुर्वेद में अमूमन त्वचा विकारों को कुष्ठ रोग के अंतर्गत रखा गया है, जिसे महाकुष्ठ एवं क्षुद्र कुष्ठ में विभाजित किया गया है। एका कुष्ठ को क्षुद्र कुष्ठ के अंतर्गत वर्णित किया गया है एवं यह आधुनिक त्वचाविज्ञान में सोरायसिस के लगभग समान है। एका कुष्ठ में त्वचा काली एवं खुरदरी, अंगों एवं पेट के क्षेत्र में खुजली, संक्रमित क्षेत्र का काला पड़ना, त्वचा का पपड़ीदार होना है। एका कुष्ठ के उपचार में नित्य विरेचन, शमन चिकित्सा के पश्चात रक्तमोक्षण प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है। नित्य मृदु विरेचन एवं शमन चिकित्सा के बाद रक्तमोक्षण से एका कुष्ठ रोगियों के लक्षणों में संतोषजनक सुधार प्रकट हुए हैं एवं कुष्ठ रोग की पुनरावृत्ति नहीं हुई है। प्राचीन आयुर्वेद संहिताओं के अनुसार सभी त्वचा रोगों को कुष्ठ रोग के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। प्राचीन आचार्यों ने कुष्ठ रोगों के उपचार के लिए पंचकर्म जिनमें रक्तमोक्षण की प्रक्रिया भी सम्मिलित है एवं विभिन्न शमन औषधियों और स्थानिक चिकित्सा को कार्यरत कहा है।²

सिरायन्त्रण विधि- व्यक्ति (रोगी) को भलीभाँति स्नेहन करना चाहिए। सिरावेधन के उपयोग में आने वाली सभी (रस्सी, पट्टी, कुठारिका आदि शस्त्र, रक्तस्रावक तथा रोधक औषध द्रव्य तैयार रहे अग्निताप से अथवा आतप (धूप) से उसका स्वेदन कराकर जानुभर ऊँचे आसन (कुर्सी) पर उसे बैठाये। उसके बालों को कोमल वस्त्र से बाँध दें, उसकी दोनों कोहनियों को दोनों घुटनों पर रख दें एवं दोनों हाथों में कपड़े के टुकड़े देकर मुट्टियाँ बाँधकर उनसे गरदन की दोनों ओर की धमनियों को जोर से दबायें। इस समय रोगी दाँतों को कसकर दबाये, खाँसने का प्रयत्न न करे और अपने गालों को फुलाये। इसी समय परिचारक पीठ की ओर खड़ा होकर कपड़े से इसके गला को लपेटता हुआ अपने बायें हाथ की तर्जनी अँगुली को कपड़ा के दोनों भागों के मध्य में रखकर उसके गले को कसकर बाँचे। इस चिकित्सा में रक्त निकालने के लिए विशेष नसों को छेदा जाता है। यह मुख के भीतरी की सिराओं के अतिरिक्त शिरःप्रदेश में स्थित सभी शिराओं को उभाड़ने के लिए

¹. डॉ लक्ष्मी श्री, आयुर्वेदिक थेरिपी, रोल ऑफ़ रक्तमोक्षण इन सोरायसिस आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट : टाइम्स प्रोसिड बेनेफिट्स एंड पोस्ट प्रोसिदुरल केयर, 12. 02.2025

². खानखाने, मनोहर यन, रोल ऑफ़ नित्यमृदु विरेचन एंड शमन चिकित्सा फॉलो बाय रक्तमोक्षण इन एकाकुष्ठ - ए केस स्टडी, 29 जुलाई, 2023, वाल्यूम- 7, नं- 3 (2023), आयुर्वेद: IJ-RIMI, जुलाई- सितम्बर 2023

यन्त्रणविधि कही गयी है।¹

विशेष - इस सिरायन्त्रण कार्य में यह सावधानी रखनी चाहिए कि कहीं अधिक रोगी के श्वास-प्रश्वास न के रुके सिरावेधन कराने वाला रोगी साहसिक एवं बलवान् हो। उसे स्निग्ध रस (मांसरस) युक्त भोजन करा दिया गया हो।

अलाबु (तुम्बी)²- श्रृंगी (सिंगी) इनके प्रयोग से वातदोष, दूषित रक्त को चुसकर निकालने में होता है।

तुम्बी यंत्र³ - अलाबु तुम्बी 12 अंगुल लम्बी, 18 अंगुल मोटी, 3,4 अंगुल चौड़े मुख वाली होती है उसके भीतर दीपक जलाकर उसके गरम हो जाने पर किया जाता है।

श्रृंग नाड़ी यंत्र⁴ - श्रृंगनाड़ी (सिंगी) यंत्र का मुखभाग 3 अंगुल चौड़ा 6 ल. 18 फुट, अगले भाग में सरसों के बीज के दाने के बराबर छेद होता है। यह भलीभांती बंधा होता है, इसका प्रयोग दूषित हवा अथवा रक्त चुसने के लिए किया जाता है।

जलौका विधि- सुख से जीवन-यापन करने वाले (सुकुमारो) का रक्तस्रावण करने के लिए जोंको का प्रयोग करना चाहिए⁵

विधि: जोक निर्विष (कपिला, पिंगला, शंखमुखी, मूषिका, पुंडरीमुखी, सावरिका)। हों उन्हें हल्दी के कल्क से मिले हुए जल से मट्टा अथवा कांजी से नहालाकर उसे स्वच्छ जल में छोड़ दे यदि वह यदि जोख मनुष्य त्वचा को पकड़ रखने में असमर्थ हो रही है तो, उस पर घृत, मिट्टी स्त्री का दूध अथवा रक्त दे अथवा शस्त्र द्वारा पच्छ लगा दें तब वह पकड़ लेगा जब वह जोक रक्त चूस रही है तो वह स्वयं के कन्धे उपर की ओर उठा लेती है। अत जिससे जोक के शरीर पर पतला वस्त्र डाल दे जिससे उसकी प्रतिक्रिया आसनी से देखा जा सके।

इसके अतिरिक्त यंत्र द्वारा भी दूषित रक्त का रक्तस्रावण करे श्रृंगीयंत्र द्वारा पित्तदोष रक्त का जोंक द्वारा तथा क्रफदूषित रक्त का अलाबु (तुम्बी) यंत्र द्वारा रक्तस्रावण का निर्देश है।^{6,7}

रक्त में अशुद्धि होने से परिणामस्वरूप शरीर में अनेक प्रकार स्वस्थ सम्बन्धित रोग के रोगदिष्टमान होते हैं परन्तु उसके अतिरिक्त सौन्दर्य सम्बन्धित विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं नीलिका, व्रण, मुहांसे अतः रक्त को शुद्ध करने हेतु प्राचीन काल में कई प्रयोग एवं यंत्र प्रयुक्त किये जाते थे जिससे केवल अशुद्ध रक्त को निष्काशित कर देह को सौन्दर्य प्रदान किया जा सके वर्तमान काल में भी जोक रक्तस्रावण का प्रयोग

अधिकांश लोग इस प्रक्रियाओं के दौरान न्यूनतम असुविधा महसूस करते हैं, खासकर लीच थैरेपी जैसी गैर-सर्जिकल विधियों में रक्तमोक्षण उपचार से कई रोगियों के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आए हैं। जोड़ों के दर्द में कमी हो, त्वचा में निखार, नई स्फूर्ति का अनुभव हो, उनके अनुभव इस प्रक्रिया की प्रभावशीलता के बारे में स्पष्ट प्रमाण देते हैं।

¹. अष्टांगहृदय सूत्रम् - व्याख्याकार: डॉ. त्रिपाठी, बह्मनन्द, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान 38 यू. ए. जवाहर नगर बागलो रोड, सूत्रस्थान, यंत्रविधिरध्याय पञ्चविंशो अध्याय, पृ. 274 पो.बा. नं. 2113, दिल्ली-110007, पुनःमुद्रित संस्करण, 2017,

². सूत्रस्थान, यंत्रविधिरध्याय, पञ्चविंशो अध्याय, पृ.274

³. वही

⁴. वही, सूत्रस्थान, यंत्रविधिरध्याय, पञ्चविंशो अध्याय, पृ.278

⁵. अष्टांगहृदयम्, सूत्रस्थान, षड्विंशो अध्याय, शस्त्रविधिरध्याय:26, पृ.269

⁶. अष्टांगहृदयम्, पृ.293

⁷. चरक संहिता- व्याख्याकार- जयदेव विद्यालंकार, उत्तरो भाग, प्रकाशक- सुन्दरलाल जैन, मैनेजिंग प्रोप्राइटर, मोतीलाल बनारसीदास, पो.बा. 75, नेपाली खपरा वाराणसी, चिकित्सास्थानम् अध्याय 29, पृ.469, षष्ठ संस्करण, 1960

आयुर्वेद का यह व्यापक दृष्टिकोण, है जो एका कुष्ठ रोग के उपचार में सहायक है, रोगी के लक्षणों में उल्लेखनीय राहत दिलाने में मदद करता है। इनके विशेषज्ञ चिकित्सकों, व्यक्तिगत देखभाल एवं आयुर्वेदिक सिद्धांतों की गहरी समझ के साथ, रोगी निश्चित हो सकते हैं।¹

चर्चा - प्राचीन भारत में रक्तमोक्षण की प्रक्रिया शस्त्रविस्त्रवण के अंतर्गत प्रच्छान एवं सिरावेध, इस विधि में जिन शस्त्रों से अशुद्ध रक्त का निष्कासन किया जाता है। अनुशस्त्र विस्त्रावण विधि में श्रृंग, जलौका, आलाबु, घंटी यंत्र आदि विधिया आदि विधिया प्रयुक्त की जाती है। परन्तु वर्तमान काल में रक्तशोधन की सभी विधियाँ संभवतः अपेक्षाकृत कम प्रयोग में लायी जाती है। इन सभी प्राचीन विधियों में वर्तमान में जलौका विधि प्रयोग में लायी जा रही है एवं कापिंग क्रिट (इसमें त्वचा पर छोटे छोटे चीरे लगाये जाते थे) कुछ सुई के प्रकार जो अशुद्ध रक्त का शोधन करते है। जलौका एवं अन्य रक्त मोक्षण विधि के प्रयोग से वर्तमान में अनेक विद्वान समस्त भारत में इन विधियों का प्रयोग कर रोगियों का उपचार कर रहे है। उन विद्वानों के नाम निम्नलिखित है। जलौका के अतिरिक्त अन्य रक्तमोक्षण की प्रक्रिया में रोगी को अधिक पीड़ा की अनुभूति होती होगी।

वर्तमान में प्रासंगिकता

वर्तमान काल में कुछ इस प्रकार के संस्थान है जो इन प्रक्रियाओ को उन्ही प्राचीन विधि के अनुरूप अथवा वैज्ञानिक विधि से भी रक्तमोक्षण की प्रक्रिया को क्रियान्वित करते है एवं इच्छुक व्यक्ति इन प्रक्रियायों द्वारा लाभन्वित हो सकते है, जिनमें भारत में कुछ प्रमुख आयुर्वेदिक संस्थान है, जिनमे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की आयुर्वेदिक विभाग, वाराणसी से डॉ. डी.के. भक्ति, नेशनल इंस्टीट्यूट, जयपुर (NIT) ; इंस्टीट्यूट ऑफ़ टीचिंग एंड रिसर्च जामनगर (ITRA) है। महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस, वर्धा (MGIMS) से डॉ. शीतल आसुतकर ; गवर्मेण्ट मेडिकल कॉलेज, अमरावती (GMC) से डॉ. वासने ; आल इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ आयुर्वेद, दिल्ली (AIIA) से डॉ. व्यास मोहन्ता, आदि विद्वान् विभिन्न संस्थानों में कार्यरत होकर रक्तमोक्षण विभिन्न प्रक्रियायों द्वारा लोगो को लाभन्वित एवं रोगमुक्त करने का निरन्तर प्रयास कर रहे है। इसके अतिरिक्त अनेक निजी संस्थान भी उपलब्ध है, जिनमें चरका, पंचकर्म एवं अनुसंधान का विशिष्ट आयुर्वेद संस्थान पाँचवीं मंजिल, ज्योति प्राइम लेन, जीवीके वन मॉल के बगल में, पोस्ट ऑफिस लेन, रोड नंबर 1, बंजारा हिल्स, हैदराबाद, तेलंगाना, (भारत) – 500034, जी.यस. आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल दिल्ली, कामा आयुर्वेद, सेकंड प्लोर, 77 ब्लाक सी, तरुण इन्क्लेव, प्रीतमपुरा दिल्ली 110034, कामा आयुर्वेद, दिल्ली इस रजिस्टर टी यम एंड अ ब्रांड के आर यम आयुर्वेद लिमिटेड. की (Karma Ayurveda is Registered TM & a Brand by KRM Ayurveda Ltd.) (निजी संस्थानों की सूची को प्राप्त करने के लिए इंटरनेट का सहयोग प्राप्त किया गया है, कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं)

निष्कर्ष - रक्तमोक्षण व्यक्ति के शरीर के सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य कल्याण में सहायक प्रक्रिया हो सकती है। आधुनिक युग में, त्वचा का सौंदर्य प्रसाधन के रूप में अधिक महत्व है, जो व्यक्ति को आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व को बढ़ाने के साथ-साथ स्वस्थ मानसिकता प्राप्त करने में भी सहायक होता है। रक्तमोक्षण की प्रक्रिया त्वचा के दौहिक सौन्दर्य के वर्द्धन में एक महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक प्रक्रिया है, जिसके प्रयोग से प्राचीन भारत में व्यक्ति अपने व्याधियों से निवारण प्राप्त कर लेता था।

¹. रक्तमोक्षण आयुर्वेदिक उपचार: प्रक्रिया, प्रकार, लाभ और अधिक जानकारी जी. यस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल दिल्ली, 04 नवंबर, 2024

वर्तमान काल में भी यह प्रक्रिया वैज्ञानिक तरीकों अथवा प्राचीन तरीकों का प्रयोग करके इस प्रक्रिया को जीवन्त किये हुए है। हालांकि, पंचकर्म की नैदानिक प्रक्रियाओं में रक्तमोक्षण की अपेक्षाकृत सीमित अनुशंसाएं अथवा उपयोग हैं, जो प्रक्रिया से जुड़े भय, कौशल की कमी आदि के कारण हो सकते हैं।

